अख़्लाकी

कहानियां

भाग—१

अफ़ज़ल हुसैन
एम०ए०एल०टी०
अनुवाद
नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

प्यारे बच्चो!
तुमने कहानियां तो बहुत-सी सुनी होंगी।
चांद-तारों की कहानियां,
भालू-बन्दरों की कहानियां आदि।
मां से, दादी से, बड़े भाई-बहनों से,
तुम कहानियां सुनते चले आ रहे हो।
कहानियों में,
तुम्हारी दिलचस्पी भी तो बहुत है।
तुम्हारी इस दिलचस्पी को,
ध्यान में रख कर तुम्हारे लिए,
प्यारी कहानियों का,
यह छोटा-सा सैट तैयार किया गया है।
इन कहानियों से,
तुम्हारा दिल भी बहलेगा और तुम्हारी जानकारी भी बढ़ेगी।
ये कहानियां सच्चे क़िस्से हैं
इनमें आदर्श जीवन की झलकियां हैं।
और
इन्सानी ख़ूबियों की ख़ुशबू भी।
ये कहानियां केवल कहानियां नहीं,
हमारे लिए रहनुमा भी हैं।
प्यारे बच्चो!
इन कहानियों को पढ़ो
और
तुम ख़ुद इन्सानी समाज के लिए रास्ता दिखाने वाला दीप बनो।
यही हमारी तमन्ना है।
ख़ुदा तुम्हारी मदद करे।

क्या कहां

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह-रहमान, रहीम के नाम से'

१

शर्म-हया

प्यारे रसूल (सल्ल०) का बचपन था। काबा की एक दीवार कुछ टूट गयी थी। लोग उसकी मरम्मत कर रहे थे। बच्चे भी काम पर लगे हुए थे। पत्थर के टुकड़े कंधों पर रख-रख कर लाते और दीवार में लगाते। थोड़ी देर में जब कंधे दुखने लगे, तो बच्चों ने अपनी-अपनी लुंगियां खोलकर अपने कंधों पर रख लीं और पत्थर लादकर लाने लगे।

प्यारे नबी (सल्ल०) भी पत्थर ढो रहे थे। ढोते-ढोते कंधों में दर्द होने लगा। आपके चचा मौजूद थे। भतीजे की तकलीफ़ देखकर बोले :

बेटा! तुम भी अपनी लुंगी खोलकर कंधों पर रख लो ताकि पत्थर लादने में कंधे न दुखें।

चचा के हुक्म पर अमल करते हुए प्यारे नबी (सल्ल०) ने ऐसा करना चाहा, लेकिन इस बेशर्मी को सहन करना आपके बस में कब था! आप तो बचपन से ही बहुत शर्म वाले थे। लुंगी उतार कर, भला नंगा होना कैसे गवारा कर सकते थे। आप लुंगी खोलना ही चाहते थे कि शर्म के मारे बेहोश होकर गिर पड़े। चचा ने जब यह

हाल देखा, तो नंगा होने से मना कर दिया।

सवाल :

१. लड़के पत्थर क्यों ढोते थे?
२. कंधे दुखने पर उन लोगों ने क्या किया?
३. प्यारे नबी (सल्ल०) को जब चचा ने हुक्म दिया तो क्या हुआ?

२

सलाम करना

सलाम करने से मुहब्बत बढ़ती है। हज़रत उमर (रज़ि०) के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) इस बात को अच्छी तरह जानते थे। प्यारे रसूल (सल्ल०) को देखते कि वे हर छोटे बड़े को सलाम करते हैं। बच्चे तक अगर कहीं खेलते हुये मिल जाते हैं, तो हुज़ूर (सल्ल०) उनको भी सलाम कर लेते हैं। अब भला जो चीज़ हुज़ूर (सल्ल०) करते, हज़रत अब्दुल्लाह उससे क्यों चूकते। इसीलिए वे भी सलाम करने में आगे-आगे रहते थे।

आख़िर में तो आपकी यह आदत सी बन गयी थी कि सलाम करने के लिए ही बाज़ार जाते और हर दुकानदार, हर मुसाफ़िर, हर ग़रीब और बेसहारा यानी जो भी मिलता उसे सलाम करते थे।

एक दिन एक आदमी ने पूछा, "हज़रत! आप बाज़ार आते हैं, न भाव ताव करते हैं, न सौदा सुलुफ़ खरीदते हैं, न कहीं बैठते हैं, फिर आख़िर किस काम से आते हैं?"

आप बोले, "मैं सिर्फ़ सलाम करने के लिए आता हूं"

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) की नज़र में सिर्फ़ सलाम करने के लिए बाज़ार जाना, सौदा सुलुफ़ लेने के लिए बाज़ार जाने से कुछ कम ज़रूरी काम नहीं था।

सवाल :

१. हज़रत अब्दुल्लाह बाज़ार किसलिए जाते थे?
२. सलाम से क्या फ़ायदे हैं?
३. सलाम के आदाब बताओ।

३

मां-बाप की ख़िदमत

हज़रत शरफ़ुद्दीन (रह०) एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। आप अपने मां-बाप का बहुत अदब करते थे। हमेशा उनका हुक्म मानते और उनकी ख़िद्‌मत के लिए तैयार रहते थे। एक दिन की बात है, आप अभी मुन्ने से थे। अम्मी जान चारपाई पर लेटी थीं। उन्हें प्यास लगी। आप से बोलीं, "बेटा मुझे प्यास लगी है। ज़रा एक कटोरा पानी पिला दो।" आप कटोरा लेकर दौड़े हुए पानी लेने गये। घड़े से पानी उंडेल कर लौटे, तो देखा कि अम्मी जान की आंख लग गई है। अब क्या करें। अगर जगाते हैं, तो मां को तकलीफ़ होगी। इसलिए जगाना ठीक न समझा। पानी का कटोरा हाथ में लिए सिरहाने खड़े रहे कि न जाने कब मां की आंख खुल जाये और वे पानी माँग लें। रात का बड़ा हिस्सा गुज़र गया। आप इसी तरह पानी लिये खड़े रहे। आख़िर मां की आंख खुली। क्या देखती हैं कि आप पानी का कटोरा लिये खड़े हैं।

"बेटा! क्या तुम उस वक़्त से अब तक खड़े हो?" माँ ने पूछा।

"हाँ, अम्मी जान! मैं उसी वक़्त से खड़ा हूं, ताकि जब आपकी आँख खुले, पानी पेश करूँ।" आपने अदब से कहा। यह जवाब सुनकर अम्मी जान बहुत ख़ुश हुईं। अच्छे बेटे को दुआ दी। चुनांचे बड़े होकर आप अल्लाह के बहुत बड़े वली हुए।

सवाल :

१. इस कहानी को अपने लफ़्ज़ों में सुनाओ!
२. तुम अपने मां-बाप की क्या ख़िद्‌मत करते हो?

४

उस्ताद का अदब

हारून रशीद एक बहुत मशहूर बादशाह गुज़रा है। उसके दो बेटे थे। एक का नाम अमीन था, दूसरे का मामून। एक दिन की बात है, दोनों लड़के अपने उस्ताद के पास पढ़ रहे थे। इत्तिफ़ाक़ से उस्ताद को किसी काम के लिए उठना पड़ा। उस्ताद अभी तैयार होकर चलने ही वाले थे कि उनकी जूतियां सीधी करने के लिए दोनों लड़के दौड़ पड़े। जूतियों के पास पहुंच कर दोनों लड़ने लगे। हर एक चाहता था कि उस्ताद की जूतियां मैं सीधी करूं। आख़िर उस्ताद ने यह कहकर झगड़ा चुका दिया कि एक लड़का एक जूती सीधी करे, दूसरा लड़का दूसरी जूती। दोनों ने जूतियां सीधी करके रखीं और उस्ताद पहन कर बाहर गये।

हारून रशीद को जब इसकी ख़बर मिली, तो वह बहुत ख़ुश हुआ। दोनों को बुलाकर बहुत इनाम दिया। बड़े होकर यही दोनों लड़के बादशाह हुए।

सवाल :

१. दोनों शाहज़ादों ने उस्ताद की क्या ख़िदमत की?
२. बादशाह ने सुना, तो क्या किया?
३. तुम अपने उस्ताद की ख़िदमत किस तरह करते हो?

५

बड़ों का अदब

एक दिन की बात है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) और हज़रत उमर (रज़ि०) बैठे हुए थे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया:

वह कौन सा पेड़ है जो खूबियों में मुसलमानों से मिलता जुलता है, हर साल फ़ल देता है और सदा हरा भरा रहता है?

दोनों बुजुर्ग यह पहेली न बूझ सके। हज़रत उमर (रज़ि०) के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) भी मौजूद थे। वे इस पहेली को फ़ौरन बूझ गए। दिल में आया कि कह दें कि वह खजूर का पेड़ है। मगर उनके अब्बा और दूसरे बुज़ुर्ग चुप थे, इसलिए उन्होंने बोलना बे-अदबी समझा और बूझ जाने पर भी चुप रहे।

हज़रत उमर (रज़ि०) को मालूम हुआ, तो कहा "बेटे! जब तुम्हें मालूम था, तो क्यों न बताया, अगर उस वक़्त बता देते, तो मैं तुमसे बहुत खुश होता कि जिस पहेली को कोई न बूझ सका उसे हमारा मुन्ना-सा बेटा बूझ गया।" हज़रत अब्दुल्लाह बोले:

"अबा मियां! जब आप और हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) नहीं बोले, तो मैं कैसे बोल पड़ता। आप बड़ों की बेअदबी होती। इसीलिए मैं चुप रहा।"

हज़रत उमर (रज़ि०) अपने बेटे के इस जवाब से बहुत ख़ुश हुए।

सवाल :

१. हज़रत उमर (रज़ि०) की बेटे से क्या बातचीत हुई?

२. हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) पहेली बूझ जाने पर भी क्यों चुप रहे?

बच्चों से प्यार

बहुत दिनों की बात है, जब भेड़ बकरियों की तरह आदमी बिका करते थे। कुछ बुरे लोग एक नन्हें-मुन्ने बच्चे को पकड़ कर बाज़ार में बेचने के लिए लाये।

बीवी ख़दीजा (रज़ि०) ने सुना तो उन्हें बड़ा तरस आया। बच्चे को मोल ले लिया और प्यारे नबी (सल्ल०) के पास ले गयीं।

प्यारे नबी (सल्ल०) बच्चों से बहुत प्यार करते थे। इस बच्चे से तो उन्हें और ज़्यादा मुहब्बत हो गयी क्योंकि बदमाशों ने उसे मां-बाप से जुदा कर दिया था। और अब आपके सिवा इस बच्चे का और कौन सरपरस्त था। आपने बच्चे से प्यार और मुहब्बत की बातें कीं। वह भी आप से हिल मिल गया। हर वक़्त आप ही के साथ रहता। आपने उसे बड़े प्रेम से पाला।

कुछ दिनों के बाद बच्चे के बाप को ख़बर हुयी। वह अपने बेटे को ढूंढता हुआ आप (सल्ल०) के पास पहुंचा। जब उसे मालूम हुआ कि बीबी ख़दीजा (रज़ि०) ने लड़के को मोल लिया है तो वह रुपया अदा करके अपने बेटे को वापस माँगने लगा। प्यारे नबी (सल्ल०) भला रुपया कब ले सकते थे। आपने क़ीमत लिये बिना बच्चे को आज़ाद कर दिया और कहा:

"लड़का जहाँ जाना चाहे, जा सकता है।"

प्यारे नबी (सल्ल०) ने लड़के को बड़े प्रेम से पाला था। अच्छी-अच्छी बातें सिखायी थीं। प्यार से रखते थे। वह भला आप (सल्ल०) को छोड़कर कहीं और कैसे जा सकता था। इतने प्रेम से

रखने वाला उसे और कहाँ मिलता। वह प्यारे नबी (सल्ल०) के क़दमों से लिपट गया और आप (सल्ल०) को छोड़कर घर जाने के लिए तैयार न हुआ। आख़िर बाप मजबूर होकर चला गया। हां वह अपनी जगह ख़ुश था कि चलो कोई हरज नहीं, बेटा ऐसी जगह है जहाँ उसकी परवरिश, देखभाल और तरबियत अपने घर से अच्छी हो रही है।

सवाल :

१. बच्चा अपने बाप के साथ क्यों नहीं गया?
२. बाप क्या सोचकर ख़ुश था?

७

जानवरों पर रहम

एक बार की बात है । एक सहाबी (रज़ि०) कहीं जा रहे थे । कुछ दूर गये, तो रास्ते में एक झाड़ी मिली ।

झाड़ी के अंदर से चूं-चूं की आवाज़ आ रही थी । आवाज़ सुनकर वह झाड़ी के अंदर घुस गये । देखा तो वहां चिड़िया के नन्हे-मुन्ने बच्चे थे । ये अभी उड़ नहीं सकते थे । बच्चों को देखकर सहाबी (रज़ि०) बहुत खुश हुये । जल्दी से सबको पकड़ा और चादर में छिपाकर झाड़ी से निकल आयें । अभी झाड़ी से बाहर निकले ही थे कि चिड़िया बच्चों के लिए चारा लेकर आ गयी । बच्चे चादर के नीचे से चूँ-चूँ कर रहे थे । चिड़िया समझ गयी कि यही आदमी मेरे बच्चों को लिये जा रहा है । वह बहुत बेचैन हुयी और सहाबी के सिर पर मंडराने लगी । सहाबी ने चिड़िया के चिल्लाने की परवाह न की और बच्चों को चादर में छिपाये प्यारे नबी (सल्ल०) के पास पहुंचे।

चिड़िया के नन्हें-नन्हें बच्चों को देखकर आपको तरस आ गया। पूछा: "ये बच्चे तुम्हें कहां मिले?" सहाबी (रज़ि०) ने सारा हाल कह सुनाया । प्यारे नबी (सल्ल०) तो बड़े रहमदिल थे । बच्चों को मां से छीन लेना और इस तरह मां, बच्चे सबको सताना और परेशान करना भला आप कब गवारा कर सकते थे । कहा "जाओ इन बच्चों को वहीं छोड़ आओ । सहाबी (रज़ि०) गये और बच्चों को झाड़ी में छोड़ आये ।

सवाल :

१. सहाबी (रज़ि०) ने चिड़िया के बच्चे किस तरह पकड़े?
२. प्यारे नबी (सल्ल०) ने जब बच्चों को देखा तो क्या हुक्म दिया?
३. जानवरों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए?
४. अगर तुमने किसी जानवर के साथ अच्छा सुलूक किया हो, तो बताओ।

८

बड़ों को दीन सिखाने का तरीक़ा

एक दिन की बात है। हज़रत हसन (रज़ि०) और हज़रत हुसैन (रज़ि०) अभी छोटे ही थे। इनके यहां एक बद्दू आया। बद्दू बिल्कुल देहाती और गंवार था। वुज़ू करने का सही तरीक़ा भी नहीं जानता था। नमाज़ का वक़्त आया। बद्दू वुज़ू करने बैठा। जानता था नहीं ग़लत सलत वुज़ू करने लगा।

इन दोनों ने देखा। दीन की बात थी। ग़लती पर टोकना ज़रूरी था। लेकिन टोकें किस तरह। बद्दू उम्र में इन दोनों से बहुत बड़ा था। बड़ों को खुल्लम-खुल्ला टोकना बेअदबी थी। हो सकता था बद्दू को बुरा भी लगता।

आख़िर दोनों को एक तरकीब सूझी। लोटे में पानी लेकर वुज़ू करने बैठ गये। और बद्दू से बहुत अदब से कहा:

"बड़े मियाँ! हम दोनों भाई वुज़ू कर रहे हैं, ज़रा देखिए हम लोग ठीक से करते हैं। अगर ग़लत करें, तो बता दीजिएगा।"

यह कह कर दोनों ने सही तरीक़े से वुज़ू किया। बद्दू ध्यान से देखता रहा। उसकी समझ में आ गया कि वुज़ू करने का सही तरीक़ा क्या है।

इस तरह इन दोनों ने अपने से ज़्यादा उम्र के आदमी को दीन की एक बात बता दी। सवाब का सवाब मिला और बद्दू को बुरा भी न लगा।

सवाल :

१. बद्दू किस तरह वुज़ू कर रहा था?
२. हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि०) ने उसे किस तरह समझाया?
३. बड़ों को दीन सिखाने का तरीक़ा क्या होना चाहिए?

१

ख़िदमत

मुसलमानों में बहुत से ऐसे खलीफ़ा गुज़रे हैं, जिनका दर्जा आजकल के राजाओं, वज़ीरों और कमान्डरों से ऊँचा था। मगर वे बड़ी सादगी के साथ अपनी ज़िन्दगी बसर करते थे। अपने आराम पर बहुत कम ख़र्च करते थे।

इसी तरह के एक खलीफ़ा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) थे। ये दीन के बहुत बड़े ख़ादिम थे। एक रात आप लेटे हुए थे। गर्मी का महीना था। पसीना बहुत आ रहा था। दासी पंखा हाथ में लिये झल रही थी। सहसा दासी को नींद आ गयी। आप उठे उसके हाथ से पंखा ले लिया और ख़ुद दासी को झलने लगे।

थोड़ी देर में दासी की आंख खुल गयी। खलीफ़ा को पंखा झलते देखकर वह बहुत शर्मिन्दा और परेशान हुयी। आपने कहा:

"घबराती क्यों हो, तुम भी तो आख़िर मुझ जैसी एक इंसान हो। जब मैं गर्मी से परेशान था, तो तुमने पंखा झलकर आराम पहुंचाया, फिर जब तुम्हें गर्मी लगी तो मैंने पंखा झल दिया। इसमें बुराई क्या हुयी।"

सवाल :

१. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि०) कौन थे?
२. आपने दासी के साथ क्या सलूक किया?
३. दासी शर्मिन्दा हुयी, तो आपने क्या कहा?

१०

पड़ोसियों का ख़याल

प्यारे नबी (सल्ल०) के अच्छे साथियों को महावा (रज़ि०) कहा जाता है। आपके एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) थे। आप बहुत नेक और अल्लाह और रसूल (सल्ल०) के बड़े फ़रमांबरदार थे।

एक दिन हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) के यहां एक बकरी ज़बह की गयी। आपके पड़ोस में एक यहूदी रहता था। इत्तिफ़ाक़ से आप कहीं ब हर गये हुए थे। जब शाम को वापस लौटे, तो घर वालों से पूछा : "ाया तुमने पड़ोसी को भी गोश्त भेजा?" "वह यहूदी है उसके यह क्यों गोश्त भेजते?" घर वालों ने जवाब दिया।

"यहूदी होने से क्या हुआ?" हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) ने कहा: "है तो हमारा पड़ोसी।" अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बार बार ताकीद की है:

"पड़ोसी से अच्छा सलूक करो।

चाहे पड़ोसी मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम।"

फिर आपने उस वक़्त तक गोश्त न खाया जब तक यहूदी के घर न भिजवा दिया।

सवाल :

१. सहाबी किसे कहते हैं?
२. घर वालों ने गोश्त क्यों नहीं भेजा था?
३. हज़रत अब्दुल्लाह ने क्या कहा?
४. पड़ोसियों के बारे में क्या हुक्म है?

११

बदला लेने से बचो

एक बार की बात है। जिहाद में हज़रत अली (रज़ि०) का एक दुश्मन से मुक़ाबला हुआ। हज़रत अली (रज़ि०) बड़े बहादुर थे। दुश्मन भी था पहलवान। मगर भला हज़रत अली (रज़ि०) का कब मुक़ाबला कर सकता था। आखिर हज़रत अली ने दुश्मन को दे पटका और सीने पर सवार हो गये। तलवार खींचकर उसकी गर्दन उड़ाने वाले थे कि उसने आप के मुंह पर थूक दिया।

दुश्मन का थूकना था कि आप उसके सीने से उतर कर अलग खड़े हो गये और कहा:

"जाओ अब मैं तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकता। अब तक तो मैं दीन के लिए लड़ रहा था। अब अगर तुम्हें क़त्ल करता हूं तो इसमें मेरे गुस्से का भी हिस्सा शामिल होगा। और हो सकता है कि अल्लाह के यहां इसकी गिनती बदला लेने में हो जाये। तुमने मेरी बेइज़्ज़ती की मैं इस का बदला नहीं लेना चाहता। अपने नफ़्स के लिए किसी आदमी का ख़ून बहाना बहादुरी नहीं बुज़दिली है।"

वह आपके इस बर्ताव से बहुत मुतास्सिर हुआ और मुसलमान हो गया।

सवाल :

१. इस कहानी को ज़ुबानी सुनाओ?
२. हज़रत अली (रज़ि०) ने दुश्मन को क्यों छोड़ दिया?
३. आपके बर्ताव का क्या असर पड़ा?

१२

भेद छिपाना

हज़रत अनस (रज़ि०) एक बहुत बड़े सहाबी हुए हैं। आप बचपन ही से बहुत नेक थे। एक दिन की बात है, व बच्चों के साथ खेल रहे थे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उधर से गुज़रे। बच्चों को सलाम किया। हज़रत अनस (रज़ि०) को बुलाया और एक काम से कहीं भेज दिया। इत्तिफ़ाक़ से उसके पूरा करने में काफ़ी देर हो गयी। घर आये तो मां ने पूछा:

"अनस तुम इतनी देर कहां रह गये थे?"

हुज़ूर (सल्ल०) ने एक ज़रूरत से भेजा था। हज़रत अनस (रज़ि०) ने जवाब दिया।

"वह क्या?" मां ने पूछा।

आप बोले, वह एक राज़ (रहस्य) है।

मां ने कहा, "देखो बेटा। आपका राज़ किसी से न कहना।"

हज़रत अनस (रज़ि०) ने यह बात अच्छी तरह याद कर ली और ज़िन्दगी भर किसी से न बताया।

हज़रत साबित (रज़ि०) आपके गहरे दोस्त थे। एक दिन आपने इस क़िस्से को उनसे बयान किया और बोले:

साबित! अगर वह भेद मैंने किसी को बताया होता, तो तुम्हें ज़रूर बताता।

सवाल :

१. हज़रत अनस (रज़ि०) ने मां से क्या कहा था?
२. हज़रत साबित (रज़ि०) कौन थे?
३. आपने उनसे क्या कहा? क्यों?

१३

सदक़े से बचो

एक बार की बात है। प्यारे नबी (सल्ल०) के पास सदक में कुछ खजूरें आयीं। लोग अक्सर सदक़े की चीज़ें आपके पास भेज देते, मगर आप न उसमें से खुद इस्तेमाल करते और न घर वालों को इस्तेमाल करने देते। बल्कि सब ग़रीबों में बांट दिया करते थे।

इस बार जो खजूरें आयी थीं, वे अभी बांटी नहीं गयी थीं। एक खिड़की पर रखी थीं। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत हुसैन (रज़ि०) वहां आ निकले। वे अभी बच्चे थे। उन्हें यह भी मालूम न था कि हुज़ूर (सल्ल०) ने सदक़े की चीज़ें खाने से अपने घर वालों को रोक दिया है। बच्चे तो थे ही, खिड़की पर चढ़ गये और एक खजूर निकालकर मुंह में रख ली। आपने देखा, तो कहा:

"बेटा इसको फेंक दो, हमारे लिए सदक़े की चीज़ें जायज़ नहीं।"

हज़रत हुसैन (रज़ि०) ने मुंह से निकाल कर खजूर बाहर फेंक दी।

सवाल :

१. सदक़े की चीज़ आप क्या करते थे?
२. हज़रत हुसैन (रज़ि०) ने क्या किया था?
३. आपने खजूर क्यों फेंकवा दी?

१४

सदा सच बोलो

अपनी अम्मी जान से तुमने बड़े पीर साहब का नाम तो सुना होगा? आपका पूरा नाम था शैख़ अब्दुल क़ादिर (रह०)। आप गीलान के रहने वाले थे। इसीलिए आपके नाम के साथ गीलानी लिखा जाता है।

अल्लाह आप पर रहम करे। आप बहुत बड़े बुज़ुर्ग और अल्लाह वाले इंसान थे। अभी छोटे से थे कि बाप का साया सिर से उठ गया। आप बचपन से ही लिखने पढ़ने के बहुत शौक़ीन थे। सुना करते थे कि बग़दाद नगर में बहुत अच्छे-अच्छे आलिम हैं। इब्तिदाई तालीम पूरी करने के बाद आपको बग़दाद जाने का शौक़ पैदा हुआ। अपनी मां से कहा, मुझे पढ़ने के लिए बग़दाद भेज दीजिए। वे तैयार हो गयीं।

उस वक़्त आजकल की तरह सफ़र आसान न था। पैदल चलना पड़ता था या जानवरों की पीठ पर सवार होकर। रास्ते में लूटमार का भी ख़तरा रहता। इसलिए लोग क़ाफ़िले के साथ सफ़र करते थे।

बग़दाद जाने वाले एक क़ाफिले के साथ आपका जाना तय हो गया। चलते वक़्त मां ने चालीस दीनार आपके कपड़े में बग़ल के नीचे सी दिये, ताकि चोरी से बचे रहें। और ताकीद कर दी कि बेटा! कैसी भी मुसीबत पड़े चाहे जान पर बन आये लेकिन झूठ कभी न बोलना।

क़ाफ़िला रवाना हुआ। आप भी साथ थे, कुछ ही दूर गये होंगे कि डाका पड़ा।

सारा काफ़िला लुट गया। एक डाकू ने आपसे पूछा:

"मियां साहबज़ादे! कुछ तुम्हारे पास भी है?"

आपने जवाब दिया : "हां, चालीस दीनार हैं।" आपका सादा लिबास देखकर डाकू को यकीन न हुआ। समझा कि हंसी कर रहे हैं। इसी तरह कई डाकुओं से सामना हुआ। सबके पूछने पर आपने यही कहा कि– "हां मेरे पास चालीस दीनार हैं।"

आख़िरकार डाकुओं के सरदार तक नौबत पहुँची। उसने पूछा:– "कहां हैं?" आपने कहा: "मेरे लिबास में बग़ल के नीचे सिले हुए हैं।"

डाकुओं ने कपड़ा फाड़ कर देखा, तो सचमुच चालीस दीनार निकले। इस पर डाकुओं का सरदार बड़ा हैरान हुआ। पूछा:

"क्यों बेटे! जिस चीज़ को गुम होने के डर से इतना छिपा कर रखा था, हमारे पूछने पर क्यों बता दिया?"

"मेरी अम्मी ने चलते वक़्त यह ताकीद कर दी थी कि कैसी भी मुसीबत पड़े कभी झूठ न बोलना।" आपने जवाब दिया: "मैं मां की बात कैसे टालता?"

आपकी इस बात से सरदार पर बहुत असर हुआ। उसने सोचा कि इतने से बच्चे को अपनी मां के हुक्म का इतना ख़्याल है, और मैं हूं कि अल्लाह और रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ डाका मारता फिरता हूँ। सरदार और उसकी टोली के सभी डाकुओं ने फ़ौरन तौबा की। तमाम लूटा हुआ माल काफ़िले को वापस कर दिया और सब नेक बन गये

सवाल :

१ बड़े पीर साहब का नाम क्या था? वे कहां के रहने वाले थे?
२. पढ़ने के लिए कहां जा रहे थे? रास्ते में क्या हुआ?
३. आपके सच बोलने का क्या असर पड़ा?